ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research e-Journal

शोधपत्र शीर्षक

कैकेयीविजयम् नाटक के आधार पर कैकेयी का उत्थान

प्रस्तुतकर्ता

साकलिया प्रकाश एल

एम.ए एम.फिल

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

'कैकेयीविजयम्' नाटक के आधार पर कैकेयी उत्थान

संस्कृत साहित्य में महाभारत और रामायण दो आर्ष महाकाव्य हैं । विद्वज्जनोंने इनमें से आधार लेकर अनेकविध साहित्य की रचना की हैं । डॉ.रामजी उपाध्याय ने भी रामायण का आधार लेकर 'कैकेयीविजयम्' नाटक की रचना की हैं ।

संस्कृत नाटकों में लेखक मूल आधार सामग्री मे से कुछ परिवर्तन करके नये ढंग से प्रस्तुत करते हैं । डॉ.रामजी उपाध्याय ने भी इस नाटक मे कैकेयी के पात्र को लोककल्याण और उमदा नारी के रूप में प्रस्तुत किया हैं ।

कैकेयी शास्त्र–शस्त्रनिपुण और व्यवहारज्ञान में भी निपुण हैं । इसी लिए कैकेयी विवाह के लिए एसे वर को योग्य समजती है जो धनुर्विद्या में उससे बढ़कर हो न की सौंदर्य में श्रेष्ठ हों । –

आर्य, **किं न विदितं भवता यद् राजकुमारी रूपेणाभिजात्येन च तमेवानन्यतमं वरं वरीतुकामा यः शब्दवेधिशरप्रयोगेण तामतिशयीत ।**

वाल्मीकि रामायण में कैकेयी को स्वार्थी और पुत्र प्रेम में आसक्त बताया हैं । जबकी इस नाटक में कैकेयी कर्तव्यनिष्ठ बताई गई हैं । इसीलिए कीसि भी परिस्थिति में विचलित नहीं होती हैं । गृहकार्य और राजकार्य में वह संलग्न होती हैं इसीलिए अपने पुत्र भरत का पालन–पोषण का समय नही दे पाती इसीलिए उसने भरत को मामा के पास भेज देती हैं ।

स्वपुत्रस्य भरतस्य विनयार्थमवकाशो मे नासीत् । – कैकेयीविजयम् – तृतीय अंक – पृ.१५

देवों और दानवों के युद्ध में इन्द्र दशरथ की सहायता मागते हैं तब कैकेयी हठ करके उसके साथ जाती हैं । सारथी के घायल हो जाने पर न केवल राजा की रक्षा करती हैं बलकि राक्षसों का संहार करके देवताओं को विजय भी दिलाती हैं । इसीलिए निराशायुक्त देवगण कैकेयी के योगदान की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हैं । इस कार्य की प्रशंसा करते हुए स्वयं ब्रह्मा आशीर्वाद देने आते हैं । स्वर्ग का कार्य सम्पन्न होने के उपरान्त कैकेयी पृथ्वीलोक पर दण्डकारण्य में राक्षसों से त्रस्त ऋषियों को राक्षसो से ऋषिमुनियों की रक्षा करने का

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

वचन याद दिलाते हैं ।

अपरं च दण्डकारण्याश्रितान् ऋषिन् राक्षसेभ्यो रक्षितुमार्यश्चिरं कृतसङ्कल्पः ।

कैकेयीविजयम् – चतुर्थ अंक – पृ.२१

ब्रह्मा कैकेयी को कहते की लोक ही लिए तुमको ही यह कार्य सम्पन्न करना हैं । देव–असुर युद्ध में दशरथ नें कैकेयी को दो वरदान दिये थे । इन दोनों वरों को कैकेयी लोकहित के लिए तत्काल पूर्ण कर लेती हैं । प्रथम वर में सामर्थ्ययुक्त राम और लक्ष्मण के सशक्त हाथो में दण्डकारण्य के ऋषियों की सुरक्षा का कार्य सौपती है तथा द्वितीय वर में भरत युवराज बनकर अयोध्या का शासन संचालन करे और अभिषेक राम की चरण–पादुका का हों । वाल्मीकि रामायण में कैकेयी को पुत्र प्रेम में आसक्त होकर दो वरदान की याचना की थी ।

इस नाटक के अनुसार राम को वन भेजने का कैकेयी उद्देश राक्षसों का संहार करना था । लोककल्याण की भावना से कैकेयी ने ये वर लिया था । दण्डकारण्य में जाते ही कइ राक्षसों पलायन हो गये थे और कई राक्षसों का संहार कर दिया था । राम ने चित्रकूट से गोदावरी तट पर जाकर वहाँ के भयंकर राक्षस समूह को विनष्ट किया । रावण ने सीता का हरण किया था इसीलिए राम ने समग्र राक्षस साम्राज्य नष्ट कर दिया । इस तरह वन में १४ वर्ष व्यतीत हो गये । दीर्घकाल से ऋषिचर्या करने के कारण राम का मन राजोचित भोग–विलास से पराङ्मुख हो गया था । परन्तु कैकेयी राक्षसों के विनाश के उपरान्त शीघ्र अयोध्या आने का सन्देश भेजती है । राम के वन से आने पर कैकेयी चिर अभिलषित रामराज्याभिषेक का आयोजन करती है ।

अद्य श्रीरामस्य चिराभिलषितोऽभिषेको देव्या कैकेय्या आध्यक्षे सम्पादयिष्यते ।

कैकेयीविजयम् – चतुर्थ अंक – विष्कम्भक – पृ. – २८

जिसको देवता, ऋषि, गन्धर्व आदि अभिनन्दन में आते हैं । मुख्य अतिथि के रूप में पधारे हुए ब्रह्मा अयोध्यावासियों के समक्ष कैकेयी द्वारा किए गये कार्यो की समीक्षा करते हुए कहते है – कैकेयी विश्वशान्ति की प्रतिष्ठ हैं ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

अये विश्वलोकप्रतिनिधिः कथं नाम भवतां कीर्तनगाथायां कैकेयी नोपन्यस्यते ।

कैकेयीविजयम् – पञ्चम अंक – पृ.३०

यदि दण्डकारण्य में राम को न भेजती तो सम्पूर्ण पृथ्वी को आतंकित करने वाले नरभक्षी राक्षसों के कुकृत्यों का समापन कैसे होता? संस्कृति तथा राष्ट्र का निर्माण करने वाले ऋषि–मुनियों को सुरक्षा कैसे प्राप्त होती? तदनन्तर अश्रुपूर्ण नेत्रों से मुक्त कैकेयी आकर ब्रह्मा को प्रणाम करती हैं और कहती है कि आपके कार्य को पूर्ण करने के लिए राम को वन भेजकर सीता को वल्कल पहनाकर और पति को स्वर्ग में प्रतिष्ठापित करते हुए मैंने कितनी निन्दा झेली, अपयश सहन किया, चिरकाल से अपयश में ही जी रही है, आपने मेरे भाग्य मे अपयश क्यो लिखा? ब्रह्मा उत्तर देते हुए कहते है की जिस पर मेरी सर्वाधिक कृपा होती है उससे ही मे लोकहित का कार्य करवाता हुँ ।

ये भवन्ति मे प्रसादपात्रं तानेव लोकहितलतिकापाशेनानुबध्नामि ।

कैकेयीविजयम् – पञ्चम अंक – पृ.३२

तुमने महान कार्यो को सम्पन्न करके यश प्राप्त किया है । तमु यशस्विनी हो । इसके अनन्तर कैकेयी ब्रह्मा से सबका हित करने तथा सभी का सर्वोदय करने का वर माँगती हैं जिससे जीवन की पूर्णता हो ।

सर्वः सर्वशुभङ्करः प्रभवतात् सर्वोदयो दृश्यताम्
सीताराममयं जगत् प्रणयतात् सर्वस्य सर्वोत्तमम् ।।

कैकेयीविजयम् – पञ्चम अंक – पृ.३२

इस प्रकार 'कैकेयीविजय' नाटक में सर्वत्र स्वार्थ–भावना त्यागकर लोकहित को महत्त्व दिया गया हैं । अत्यन्त प्रियय होने पर भी कैकेयी अपने प्रति महाराज दशरथ के देवलोक की रक्षा हेतु वहाँ प्रतिष्ठापित करती हैं । राम को वन भेजना भी जनहित का कार्य था क्योंकि यदि कैकेयी राज्य मोह मे राम को वन भेजतीं तो क्यों चौदह वर्ष तक ही भेजती और राक्षसों का समूल विनाश हो जाने पर पुनः क्यों बुलाने के लिए सन्देश भेजतीं तथा उनका राज्याभिषेक करती ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

इस प्रकार 'कैकेयीविजयम्' नाटक कर्तव्यता, स्वार्थ–परित्याग, समेषां दृष्टि एवं मानवीय मूल्यों को स्थापित करता हैं । महाराणी कैकेयी के माध्यम से उन्होंने जीवन के विभिन्न पक्षों को चित्रांकित किया है यह समस्त मूल्य हमारे जीवन के ही आयाम है 'कैकेयीविजयम्' कैकेयी का चित्रण हमारे सपक्ष उनके सशक्त रूप कल्पना करता है उनका जीवन संघर्ष की गाथा हैं । वे स्वयं को त्याग की देवी पर चढ़ाकर जनसामान्य यहाँ तक की देवों और राक्षसों का मार्ग भी प्रशस्त करती हैं ।